

मतिज्ञानावरणकी जघन्य प्रदेशउदीरणावृद्धि किसके होती है? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जो जीव उसके अनन्तर्वे भागसे हीन होता है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। उसकी जघन्य हानि किसके होती है? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उसकी जघन्य हानि होती है। दोनोंमेंसे किसी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नोकषायोंकी यह प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उक्त प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्वामित्व देव-नारकियोंमें देना चाहिए। निद्रा आदि पाँच दर्शनावरण की प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य संक्लेशयुक्त जीवमें उनका जघन्य स्वामित्व देना चाहिये। नारकायुकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो नारकी जीव उत्कृष्ट सातोदयस्थानसे द्विचरम सातोदयस्थानको प्राप्त हुआ है उसके नारकायुकी जघन्य वृद्धि होती है। उसकी जघन्य हानि किसके होती है? जो द्विचरम सातोदयस्थानसे चरम सातोदयस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य हानि होती है। दोनोंमेंसे किसी भी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है। तिर्यगायु, मनुष्यायु और देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है। विशेष इतना है कि उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट सातोदययुक्त तिर्यच, मनुष्य और देवमें यथाक्रमसे उनका जघन्य स्वामित्व कहना चाहिये।

सव्वणामपयडीणं जहण्णवड्ढि-हाणी-अवड्ढाणाणि भण्णमाणे मदिणाणावरणभंगो। णवरि अप्पिद-अप्पिदणामपयडीणमुदयसंभवपदेसम्हि उक्कस्स-अणुक्कस्ससंकिलेसु जहण्णसामित्तं दादव्वं। उच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं जहं वड्ढी कस्स? जो उक्कस्ससंकिलेसादो दुचरिमसंकिलेसं गदो तस्स जहं वड्ढी। जहण्णिया हाणी कस्स? जो दुचरिमसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स जहं हाणी। एगदरमवड्ढाणं। एवं जहण्णसामित्तं समत्तं।

सब नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानकी प्ररूपणा करनेपर वह मतिज्ञानावरणके समान करना चाहिये। विशेष इतना है कि विवक्षित विवक्षित नामप्रकृतियोंके उदयकी संभावनायुक्त ऐसे उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट संक्लेशवाले जीवोंमें उनके जघन्य स्वामित्वको देना चाहिये। उच्च व नीच गोत्र तथा पाँच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है?

जो उत्कृष्ट संक्लेशसे द्विचरम संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य वृद्धि होती है। उनकी जघन्य हानि किसके होती है? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उसकी जघन्य हानि होती है। दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है। इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ।

अप्पाबहुअं। तं जहा -- मदिआवरणस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि। उक्क० वट्ठी असंखेज्जगुणा। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरण-सम्मत्त-मिच्छत्त-सोलसकसाय-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-पंचिंदिय-जादि-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण (ता प्रतौ 'सरीरबंधण' इति पाठः।) -संघाद-समचउरससंटाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतरा-इयाणं पदेसउदीरणाए उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि। उक्कस्सिया वट्ठी असंखे० गुणा। असादस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि। वट्ठी असंखे० गुणा। दंसणावरणपंचयस्स उक्क० वट्ठी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि। सादस्स हाणी-अवट्ठाणाणि थोवा। वट्ठी असंखे० गुणा। इत्थि-णवुंसयवेद-अरदि-सोगाणं सब्वत्थोवमवट्ठाणं। हाणी असंखे० गुणा। वट्ठी असंखेज्जगुणा। आउआणं वट्ठी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि। तिण्णं गईणं चदुण्णं जादीणं च उक्कस्सिया वट्ठी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसा०। मणुसगइणामाए उक्क० हाणी थोवा। अवट्ठाणमसंखे० गुणं। वट्ठी असंखे० गुणा। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघाद-पंचसंटाण-वज्जरिसहसंघडण-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थ-विहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सिया हाणी थोवा। अवट्ठाणमसंखे० गुणं। वट्ठी असंखे० गुणा। वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उक्कस्सिया वट्ठी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च विसेसाहियं। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवा। वट्ठी असंखेज्जगुणा। उवमसेढिहि उदयसंभव (का-ता प्रत्योः 'पुधअसंभव' इति पाठः।) संघडणाणं वट्ठी अवट्ठाणं थोवं। हाणी विसे०। सेसाणं संघडणाणं वट्ठी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च विसे०। अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवं। वट्ठी असंखेज्जगुणा। एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं।

अल्पबहुत्वकी परूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं। उसकी उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पाँच अन्तराय; इनकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य एवं स्तोक हैं। उससे उसकी वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रादिक पाँच दर्शनावरण प्रकृति की उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं। सातावेदनीयकी हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं। वृद्धि असंख्यातगुणी है। स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति व शोकका अवस्थान सबमें स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। आयु कर्मोंकी वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं। तीन गतियों और चार जातियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं। मनुष्यजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। अवस्थान असंख्यातगुणा है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पाँच संस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। अवस्थान असंख्यातगुणा है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। वैक्रियिक व आहारकशरीर तथा उनके अंगोपांग, बन्धन व संघात, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं। चार आनुपूर्वियोंकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं। वृद्धि असंख्यातगुणी है। उपशमश्रेणिमें जिनका उदय संभव है उन संहननोंकी वृद्धि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं। हानि विशेष अधिक है। शेष संहननोंकी वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं। अयशकीर्ति, दुभंग, अनादेय और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं। वृद्धि असंख्यातगुणी है। इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदेसउदीरणाए मदिआवरणस्स जहण्णवड्ढि-हाणि-अवड्ढाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । जधा मदिआवरणस्स तधा सव्वकम्माणं पि अप्पाबहुअं अत्थि (अ-का प्रत्योः 'णत्थि', ता प्रतौ 'ण (अ)त्थि' इति पाठः ।) , सव्वकम्मजहण्णवड्ढि-हाणि-अवड्ढाणाणं तुल्लत्तुवलंभादो । णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णिया हाणी थोवा । वड्ढी अवड्ढाणं च दोण्णि वि तुल्लाणि असंखे० गुणाणि । तिथ्यरणामाए हाणि-अवड्ढाणाणि णत्थि, वड्ढी एक्का चेव ।

प्रदेशउदीरणामें मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं । जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है वैसे ही सभी कर्मोंके अल्पबहुत्व की प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान में तुल्यता पायी जाती है । विशेष इतना है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व की जघन्य हानि स्तोक है । वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व असंख्यातगुणे हैं । तीर्थकर नामकर्मकी हानि व अवस्थान सम्भव नहीं है, उसकी एकमात्र वृद्धि ही होती है ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा (ता प्रतौ 'वड्ढिउदीरणा' इति पाठः ।) ० । तत्थ समुक्कित्तणा -- मदिआवरणस्स अत्थि असंखे० भागवड्ढी संखे० भागवड्ढी संखे० गुणवड्ढी असंखे० गुणवड्ढी असंखेज्जभागहाणी संखे० भागहाणी संखे० गुणहाणी असंखे० गुणहाणी अवड्ढाणं चेदि । एवं सव्वकम्माणं । णवरि केसिंचि सादादीणं अवत्तव्वेण सह दस होंति । तिथ्यरणामाए असंखे० गुणवड्ढी अवड्ढिदमवत्तव्वं च तिण्णि चेव होंति । समुक्कित्तणा गदा ।

यहाँ वृद्धि-उदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं । उनमें समुत्कीर्तना -- मतिज्ञानावरणके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अवस्थान भी होता है । इसी प्रकार सब कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि किन्हीं सातावेदनीय आदि विशेष कर्मोंके अवक्तव्यके साथ वे दस पद होते हैं । तीर्थकर नामकर्मके असंख्यातगुणवृद्धि, अवस्थित और अवक्तव्य ये तीनही पद होते हैं । समुत्कीर्तना समाप्त हुई ।

सामित्तं वुच्चदे । तं जहा -- चउव्विहाए वड्ढीए चउव्विहाए हाणीए अवड्ढाणस्स को सामी? अण्णदरो । एवं सव्वकम्माणं वत्तव्वं ।

स्वामित्वका कथन करते हैं। यथा -- मतिज्ञानावरणकी चार प्रकारकी वृद्धि, चार प्रकारकी हानि और अवस्थानका स्वामी कौन है? उनका स्वामी अन्यतर जीव है। इसी प्रकार सब कर्मोंके कहना चाहिये।

एयजीवेण कालो -- तिण्णिवड्ढि-तिण्णहाणीणं जहं एगसमओ, उक्कं आवलिं असंखेज्जभागो। असंखें गुणवड्ढि-असंखेज्जगुणहाणीणं जहं (अ प्रतौ 'हाणीणं जहणीणं' इति पाठः।) एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। जाणि कम्माणि उवसामगो (अ-का प्रत्योः 'उवसमगो' इति पाठः।) उदीरेदि तेसिं कम्माणमवट्ठाणस्स उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं। जाणि केवली उदीरेदि तेसिमवट्ठियस्स उक्कस्सकालो पुव्वकोडी देसूणा। एयजीवेण अंतरं कालेण साधेदूण णेयव्वं।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन करते हैं -- तीन वृद्धियों और तीन हानियों का काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है। असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। जिन कर्मोंकी उपशामक उदीरणा करता है उन कर्मोंके अवस्थानका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तमात्र है। जिन कर्मोंकी केवली उदीरणा करते हैं उनके अवस्थानका उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरको कालसे सिद्ध करके लेना चाहिये।

एत्तो णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च भाणियव्वं (ता प्रतौ 'भाणियव्वो' इति पाठः।) एत्तो अप्पाबहुअं -- मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखें भागहाणिउदीरया विसेसाहिया। संखें भागवड्ढिउं संखें गुणा। संखें भागहाणिउं विसेसां। संखेज्जगुणवड्ढिउं संखें गुणा। संखेज्जगुणहाणिउदीं विसें। असंखें गुणवड्ढिउं असंखें गुणा। असंखेज्जगुणहाणिउदीरया (अ प्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः।) विसेसाहिया। एवं सव्वकम्माणं कायव्वं।

यहाँ नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरका कथन करना चाहिये। यहाँ अल्पबहुत्व -मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं। संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं। संख्यातगुणवृद्धि उदीरक

संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक विशेष अधिक हैं। असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार सब कर्मोंके संबंधमें अल्पबहुत्व करना चाहिए।

जेसिं कम्माणं अवत्तव्वया अणंता तेसिं अप्पाबहुअं। तं जहा -- अवट्टिदउदीरया थोवा। असंखेज्जभागवट्टिउदीरया असंखे० गुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया। संखेज्जभागवट्टिउ० संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणिउ० विसेसा०। संखेज्जगुणवट्टिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणहाणिउ० विसेसा०। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। असंखेज्जगुणवट्टिउ० असंखे० गुणा। असंखेज्जगुणहाणिउ० विसेसा०। परित्तजीवियाणं कम्माणं जिया (म प्रतिपाठोऽयम्। अ- का प्रतिषु 'जेया' इति पाठः।) अत्थि तेसिं एसो चेव अप्पाबहुगालावो कायव्वो। जाणि कम्माणि अणंतजीवियाणि परित्ता जेसिं अवत्तव्वया तेसिं कम्माणं अवत्तव्वयादिसेसाणं पदाणं जहापरिवाडीए अप्पाबहुअं वत्तव्वं। एवं पदेसउदीरणा समत्ता। एवमुदीरणाउवक्कमो समत्तो।

जिन कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक अनन्त हैं उनका अल्पबहुत्व कहा जाता है। वह इस प्रकार है -- उनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। असंख्यातभागवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं। संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं। संख्यातगुणवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं। जिन कर्मोंके उदीरक परीत संख्यावाले जीव हैं उनके यही अल्पबहुत्व आलाप करना चाहिये। जिन कर्मोंके उदीरक अनन्त हैं, उनमें भी जिनका अवक्तव्य पद परीतसंख्याक जीवोंके होता है, उन कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक आदि शेष पदोंके अल्पबहुत्वका कथन परिपाटीक्रमके अनुसार करना चाहिये। इस प्रकार प्रदेशउदीरणा समाप्त हुई। इस प्रकार उदीरणाउपक्रम समाप्त हुआ।

उवसामणाउवक्कमे उवसामणा णिक्खिविदव्वा। तं जहा -- णाम-ड्ववणा-दविय-भावुवसामणा चेदि उवसामणा चउव्विहा। णाम-ड्ववणं गदं। आगमभावुवसामणा च गदा। णोआगमभावुवसामणा उवसंतो कलहो जुद्धं वा इच्चेवमादि। आगमदो दव्वुवसामणा सुगमा।

णोआगमदो दव्वुवसामणा दुविहा कम्मउवसामणा णोकम्मउवसामणा चेदि। कम्मउवसामणा दुविहा करणुवसामणा अकरणुवसामणा चेदि। जा सा अकरणुवसामणा तिस्से दुवे णामाणि -- अकरणुवसामणा ति च अणुदिण्णोवसामणा ति च (करणकया अकरणा वि य दुविहा उवसामण त्थ बिइयाए। अकरण-अणुइन्नाए अणुयोगधरे पणिवयामि।। क. प्र. ५,१. करणकय ति -- इह द्विविधा उपशमना करणकृताऽकरणकृता च। तत्र करणं क्रिया यथाप्रवृत्तापूर्वानिवृत्तिकरणसाध्यः क्रियाविशेषः, तेन कृता करणकृता। तद्विपरीताऽकरणकृता। या संसारिणां जीवानां गिरि-नदीपाषाणवृत्ततादिसम्भवद्यथाप्रवृत्तादिकरणक्रियाविशेषमन्तरेणापि वेदानुभवनादिभिः कारणैरुपशमनोपजायते साऽकरणकृतेत्यर्थः। इदं च करणकृताकरणकृतत्वरूपं द्वैविध्यं देशोपशामनाया एव द्रष्टव्यम्। न सर्वोपशामनायाः, तस्या करणेभ्य एव भावात्। मलय.) । सा कम्मपवादे सवित्थरेण परुविदा। जा सा करणुवसामणा (ता प्रतौ 'जा करणुवसामणा' इति पाठः।) सा दुविहा देसकरणुवसामणा सब्बकरणुवसामणा चेदि। तत्थ सब्बकरणुवसामणाए अण्णाणि दुवे णामाणि गणोवसामणा ति (ता प्रतौ 'गुणोवसामणा ति' इति पाठः।) च पसत्थुवसामणा ति च। एसा सब्बकरणुवसामणा कसायपाहुडे परुविज्जिहिदि। जा सा देसकरणुवसामणा तिस्से अण्णाणि दुवे णामाणि अगुणोवसामणा ति च अप्पसत्थुवसामणा ति (सब्बस्स य देसस्स य करणुवसामणा दुसन्नि एक्किक्का। सब्बस्स गुण पसत्था देसस्स वि तासि विवरीया। क. प्र. ५,२) च। एदाए पयदं।

उपशामना उपक्रममें उपशामनाका निक्षेप करते हैं। यथा -- नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव उपशामनाके भेदसे उपशामना चार प्रकारकी है। उनमें नाम व स्थापना अवगत है। आगमभावोपशामना भी अवगत है। नोआगमभावोपशामना -- जैसे कलह उपशान्त हो गया, अथवा युद्ध उपशान्त हो गया, इत्यादि। आगमद्रव्योपशामना सुगम है। नोआगमद्रव्योपशामना दो प्रकारकी है -- कर्मद्रव्योपशामना और नोकर्मद्रव्योपशामना। इनमें कर्मद्रव्योपशामना दो प्रकारकी है -- करणोपशामना और अकरणोपशामना। जो वह अकरणोपशामना है उसके दो नाम हैं -- अकरणोपशामना और अनुदीर्णोपशामना। उसकी कर्मप्रवाद में विस्तारके साथ प्ररूपणा की गयी है। जो वह करणोपशामना है वह दो प्रकार है -- देशकरणोपशामना और सर्वकरणोपशामना। उनमें सर्वकरणोपशामनाके दो नाम ओर हैं -- गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना। इस सर्वकरणोपशामनाकी प्ररूपणा कषायप्राभृतमें करेंगे। जो वह देशकरणोपशामना है उसके दो नाम और हैं -- अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना। यह यहाँ प्रकृत है।

तथ अप्सत्थुवसामणाए अड्डपदं । तं जहा -- अप्सत्थुवसामणाए जमुवसंतं पदेसगं
तमोकड्डिदुं पि (म प्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ता प्रतिषु 'तमोकड्डिदुं वापि' इति पाठः ।) सक्कं, उक्कड्डिदुं पि सक्कं (ता प्रतौ
'उक्कड्डिदुं व सक्कं' इति पाठः ।) ; पयडीए संकामिदुं पि सक्कं, उदयावलयं पवेसिदुं (अ-का प्रत्योः 'पदेसिदुं' इति
पाठः ।) ण उ सक्कं । वुत्तं च --

उनमें अप्रशस्तोपशामनामं अर्थपदका कथन करते हैं । यथा -- अप्रशस्तोपशामनाके द्वारा
जो प्रदेशाग्र उपशान्त होता है वह अपकर्षणके लिए भी शक्य है । उत्कर्षण के लिए भी शक्य है,
तथा अन्य प्रकृतिमें संक्रमण करानेके लिए भी शक्य है । वह केवल उदयावलीमें पविष्ट करानेके
लिए शक्य नहीं है । कहा भी है --

उदए संकम-उदए चदुसु वि दादुं कमेण सो सक्कं ।

उवसंतं च णिधत्तं णिकाचिदं चावि जं कम्मं (गो. क. ४४०) ॥४॥

जो कर्म उदयमें नहीं दिया जा सकता है वह उपशान्त, जो संक्रमण व उदय दोनोंमें नहीं
दिया जा सकता है वह निधत्त, तथा जो चारों (उदय, संक्रमण, अपकर्षण व उत्कर्षण) में भी नहीं
दिया जा सकता है वह निकाचित कहा जाता है ॥४॥

एदेण अड्डपदेण सामित्तं तथ पुव्वं गमणिज्जं । सामित्तणिद्वेसस्स पयदकरणं वत्तइस्सामो ।
तं जहा -- सव्वकम्माणि चारित्तमोहणीयखवग-उवसामगाण (अ प्रतौ '--कखवणउवसामगाण', का-ता प्रत्योः 'कखएण
उवसामगाण' इति पाठः ।) मणियट्टिपढमसमयं पविट्ठस्स चेव अप्सत्थुवसामणाए अणुवसंताणि ।
दंसणमोहणीयखवगउवसामगाणं अणुयट्टिकरणपढमसमयपविट्ठस्सेव दंसणमोहणीयं
अप्सत्थुवसामणाए अणुवसंतं होदि । सेसाणि सव्वकम्माणि तथ उवसंताणि अणुवसंताणि च ।
अणंताणुबंधिविसंजोयणाए अणुयट्टिपढमसमए पविट्ठंतकाले (अ प्रतौ 'पविट्ठंतकाले', ता प्रतौ 'पविट्ठंतकाले' इति
पाठः, काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः ।) चेव अणंताणुबंधिचउक्कमप्सत्थुवसामणाए अणुवसंतं । सेसाणि
सव्वकम्माणि उवसंताणि अणुवसंताणि च । णत्थि कस्स वि कम्मस्स पदेसगं सव्वमुवसंतं णाम
अधवा सव्वमणुवसंतं णाम, सव्वमुवसंतं च अणुवसंतं च । एदेण पयदकरणेण सामित्तं गदं होदि ।

इस अर्थपदके अनुसार प्रथमतः स्वामित्वका परिज्ञान कराना योग्य है ।
स्वामित्वनिर्देशपूर्वक प्रकृत करणका कथन करते हैं । यथा -- चारित्रमोहनीयके क्षपक व
उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही सब कर्म अप्रशस्त

उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होत हैं। दर्शनमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही दर्शनमोहनीय कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होता है। शेष सब कर्म वहाँ उपशान्त और अनुपशान्त भी होते हैं। अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनमें अनिवृत्तिकरण के प्रथम समयमें प्रविष्ट होनेके कालमें ही अनन्तानुबन्धिचतुष्क अप्रशस्त उपशामनासे अनुपशान्त होता है। शेष सब कर्म उपशान्त और अनुपशान्त होते हैं। किसी भी कर्म का सब प्रदेशाग्र उपशान्त अथवा सब अनुपशान्त नहीं होता, किन्तु सब प्रदेशाग्र उपशान्त भी होता है और अनुपशान्त भी होता है। इस प्रकृत करणके साथ स्वामित्व समाप्त होता है।

एत्तो एयजीवेण कालो। तं जहा -- णाणावरणस्स उवसामगो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा। तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढुपोग्गलपरियट्ठं। सेससत्तण्णं कम्माणं णाणावरणभंगो।

यहाँ एक जीवकी अपेक्षा कालका वर्णन करते हैं। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणका उपशामक जीव अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है। उनमें जो सादि-पर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गल परिवर्तन मात्र है। शेष सात कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है।

एयजीवेण अंतरं जहो (अ-का प्रत्योः 'अंतरं जहा जहो' इति पाठः।) एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमट्ठणं पि मूलपयडीणं।

एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। इसी प्रकारसे आठों ही मूल प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये।

णाणाजीवेहि भंगविचओ। संतकम्मिएसु पयदं -- णाणावरणस्स सिया सब्बे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामया च, सिया उवसामया (प्रतिषु 'उवसामओ' इति पाठः।) च अणुवसामओ च। एवं तिण्णं घादिकम्माणं तिण्णिण तिण्णिण भंगा। अघादीणं उवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं। सत्कर्मिक जीव प्रकृत है -- ज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक, कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत उपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक और एक अनुपशामक होता है। इस प्रकारसे तीन घातिया कर्मोंके तीन भंग होते हैं। अघातिया कर्मोंके बहुत उपशामक और बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं।

णाणाजीवेहि कालो -- अद्वणं पि पयडीणं उवसामया सव्वद्धा। णाणाजीवेहि णत्थि अंतरं। अप्पाबहुअं -- अद्वणं पि उवसामया तुल्ला। भुजगारउवसामया णत्थि। पदणिवखेव-वड्ढिउवसामणा च णत्थि। एवं मूलपयडिउवसामणा समत्ता।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल -- आठों ही प्रकृतियोंके उपशामक सर्वकाल होते हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा उनका अन्तर नहीं होता। अल्पबहुत्व -- आठों ही कर्मोंके उपशामक तुल्य होते हैं। भुजाकार उपशामक नहीं होते। पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामना भी नहीं है। इस प्रकार मूलप्रकृतिउपशामना समाप्त हुई।

उत्तरपयडिउवसामणा वुच्चदे। तं जहा -- सामित्तं तेणेव पायदकरणेण पुव्वपरुविदेण परुवेयव्वं। तं जहा -- सव्वकम्माणमुवसामओ को होदि? अण्णदरो।

उत्तरप्रकृतिउपशामनाकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- स्वामित्व की प्ररूपणा पूर्वप्ररूपित उसी प्रकृत करणके अनुसार करना चाहिये। यथा -- सब कर्मोंका उपशामक कौन होता है? सब कर्मोंका उपशामक अन्यतर जीव होता है।

एयजीवेण कालो। तं जहा -- सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्क० बे-छावड्ढिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं सादिरेयं। उक्कस्सेण मणुस्साउअस्स तिण्णिण पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, तिरिक्खाउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा। देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। णिरय-मणुस-देवगइ-तदाणुपुव्वी-वेउव्विय-आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघाद-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहा ^{(म प्रतिपाठोऽयम्।}

अ-का-ता प्रतिषु 'जहाकमेण' इति पाठः।) संतकम्मियस्स कालो परुविदो तथा परुवेयव्वो। सेसाणं सव्वकम्माणं उवसामयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा।

जो (ता प्रती 'वा। उवसंतकालो तेसिं कम्माणं जो' इति पाठः।) सो सादिओ सपज्जवसिदो तरस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्डुपोग्गलपरियट्टं ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है। यथा -- सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उपशामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। मनुष्यायु और तिर्यगायु का उक्त काल जघन्यसे साधिक क्षुद्रभवग्रहणमात्र है। उत्कर्षसे वह मनुष्यायुका पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पत्योपम और तिर्यगायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। उक्त काल देवायु और नारकायुका जघन्य से साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तैंतीस सागरोपम मात्र है। नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, वे तीनों आनुपूर्वियाँ, वैक्रियिक व आहारकशरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग, उनके बन्धन व संघात, तीर्थकर तथा उच्चगोत्र; इनके कालकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मिकके कालकी की गयी है वैसे करना चाहिये। शेष सब कर्मोंका उपशामककाल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है। जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनमात्र है।

एयजीवेण अंतरं -- जेसिं कम्माणं अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा उवसंतकालो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। जेसिं कम्माणं सादियसंतकम्मिओ जीवो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० जं जिस्से पयडीए संतकम्मस्स अंतरं उक्करस्सेण परूविदं तं परूवेयव्वं। णवरि देवाउअवज्जाणमाउआणं जह० अंतोमुहुत्तं।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर -- जिन कर्मोंका उपशान्तकाल अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है उन कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। जिन कर्मोंका उपशामक सादिसत्कर्मिक जीव है उन कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे जिस प्रकृतिके सत्कर्मका जो अन्तर उत्कर्षसे बतलाया गया है उसको कहना चाहिये। विशेष इतना है कि देवायु को छोड़कर शेष आयु कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है।

णाणाजीवेहि भंगविचओ -- मदिआवरणस्स सिया सव्वे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामओ च, सिया उवसामया च अणुवसामया च। जहा मदिआवरणस्स तिण्णि भंगा परूविदा तहा सव्वपयडीणं पि तिण्णि तिण्णि भंगा परूवेयव्वा। णवरि जासिं पयडिसंतं सजोगिम्मि अत्थि तासिमुवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय -- मतिज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक होते हैं, कदाचित् बहुत उपशामक व एक अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक होते हैं। जिस प्रकार ये मतिज्ञानावरणके तीन भंग कहे गये हैं उसी प्रकार सब ही प्रकृतियोंके तीन भंग कहना चाहिये। विशेष इतना है कि जिनका प्रकृतिसत्त्व सयोगकेवलीमें है उनके बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं।

कालो -- णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा। अंतरं -- णाणाजीवे (प्रतिषु 'णाणाजीवेण' इति पाठः।) पडुच्च णत्थि अंतरं। अप्पाबहुअं। तं जहा -- सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए उवसामया। सम्मत्तस्स उवसामया असंखे० गुणा। सम्मामिच्छत्तस्स उव० विसेसाहिया। मणुसाउअस्स असंखेज्जगुणा। णिरयाउअस्स असंखे० गुणा। देवाउअस्स असंखे० गुणा। देवगइणामाए संखे० गुणा। णिरयगइणामाए विसेसा०। वेउव्वियसरीरणामाए विसेसाहिया। वेउव्वियच्छक्कमुव्वेल्लिरुण पुवं देवदुगबंधगे पडुच्च उच्चागोदस्स अणंतगुणा। मणुसगइणामाए विसेसाहिया। तिरिक्खाउअस्स विसेसा०। अणंताणुबंधीणं विसेसा०। मिच्छत्तस्स विसेसा०। सेसाणं कम्माणमुवसामया तुल्ला विसेसाहिया। एत्थ भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि।

काल -- नानाजीवोंकी अपेक्षा उपशामकोंका काल सर्वकाल है। अन्तर -- नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर सम्भव नहीं है। अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- आहारशरीर नामकर्मके उपशामक सबमें स्तोक हैं। सम्यक्त्वके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्व के उपशामक विशेष अधिक हैं। मनुष्यायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। नारकायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। देवायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। देवगति नामकर्मके उपशामक संख्यातगुणे हैं। नरकगति नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं। वैक्रियिक शरीर नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं। इसका कारण यह है कि वैक्रियिकषट्ककी उद्वेलना करके पहले देवद्विकके बन्धकोंकी अपेक्षा यह अल्पबहुत्व कहा है। उच्चगोत्रके उपशामक अनन्तगुणे हैं।

मनुष्यगति नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं। तिर्यगायुके उपशामक विशेष अधिक हैं। अनन्तानुबन्धी कषायोंके उपशामक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्वके उपशामक विशेष अधिक हैं। शेष कर्मोंके उपशामक तुल्य व विशेष अधिक हैं। यहाँ भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि की सम्भावना नहीं है।

पयडिड्वाणुवसामणा -- गाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणमेक्कं चेव ड्वाणं। गोदाउआणं दोण्णि ड्वाणाणि। मोहणीयस्स अत्थि अट्ठावीस-सत्तावीस-छवीस-पणवीस-चउवीस-एक्कवीसपयडिउवसामणड्वाणाणि। एदेसिं ड्वाणाणं एयजीवेण सामित्तं कालो अंतर गाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं भुजगार-पदणिक्खेववड्ढिउवसामणाओ कायव्वाओ। णामस्स तिउत्तरसदं विउत्तरसदं छण्णवुदि-पंचाणवुदि-तिणवुदि-चउरासीदि-वासीदि त्ति सत्तण्णं ड्वाणाणमुवसामणा अत्थि, सेसाणं णत्थि। एवं पयडिउवसामणा समत्ता।

प्रकृतिस्थानउपशामना -- ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायका एक ही उपशामनास्थान है। गोत्र व आयुके दो उपशामनास्थान हैं। मोहनीयके अट्ठावीस, सत्ताईस, छब्बीस, पच्चीस, चौबीस और इक्कीस प्रकृतियोंके उपशामनास्थान हैं। एक जीवकी अपेक्षा इन स्थानोंके स्वामित्व, काल व अन्तर एवं नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर तथा अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामनाको करना चाहिये। नामकर्मसंबंधी एकसौ तीन, एकसौ दो, छ्यानवै, पंचानवै, तेरानवै, चौरासी और ब्यासी प्रकृतियों रूप इन सात स्थानोंकी उपशामना है। शेष स्थानों की उपशामना नहीं है। इस प्रकार प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई।

ठिदिउवसामणा दुविहा-- मूलपयडिड्ढिदिउवसामणा उत्तरपयडिड्ढिदिउवसामणा चेदि। तत्थ मूलपयडिड्ढिदिउवसामणाए ताव अट्ठाच्छेदो वुच्चदे। तं जहा -- गाणावरणस्स उक्कस्सड्ढिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ। जड्ढिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ आवलियाए ऊणाओ। एवं दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं। मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ। आउअस्स पुव्वकोडितिभागेण सादिरेयतेत्तीसं सागरोवमाणि दोआवलिरूणाणि (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का-

ता प्रतिषु 'आवलिरुणाणि' इति पाठः।)। जहण्णद्धिदिआवलिरुणा। णामा-गोदाणं वीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि रुणाओ।

स्थितिउपशामना दो प्रकार है -- मूलप्रकृतिस्थितिउपशामना और उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामना। उनमें पहले मूलप्रकृतिस्थितिउपशामनाके अद्धाचेदकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरण की उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम तीस कोडाकोडि सागरोपम मात्र काल तक होती है। उसकी जघन्य स्थितिउपशामना एक आवलीसे कम तीस कोडाकोडि सागरोपम मात्र काल तक होती है। इसी प्रकार दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तराय की उत्कृष्ट स्थिति उपशामना तथा जस्थितिउपशामनाका कथन करना चाहिये। मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियों से कम सत्तर कोडाकोडि सागरोपम मात्र काल तक होती है। आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम और पूर्वकोटिभिभागसे साधिक तैंतीस सागरोपम काल तक होती है। उसकी जस्थितिउपशामना एक आवलीसे कम उतनी मात्र होती है। नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम बीस कोडाकोडी सागरोपम मात्र होती है।

जहण्णअद्धाच्छेदो--णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं जहण्णद्धिदि-उवसामणा सागरोवमस्स तिण्णिण-सत्तभाग पलिदो० असंखे० भागेण रुणया। मोहणीयस्स सागरोवमं पलिदो० असंखे० भागेण रुणयं। णामा-गोदाणं सागरोवमस्स बे-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण रुणया। आउअस्स खुद्दाभवग्गहणसंखेज्जदिभागो। एवमद्धाच्छेदो समत्तो।

जघन्य अद्धाच्छेद-- ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी जघन्यस्थितिउपशामना एक सागरोपमके सात भागोंमें से पत्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन भाग प्रमाण होती है। वह मोहनीयकी पत्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र काल तक होती है। नाम व गोत्र कर्मकी एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पत्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन दो भाग मात्र होती है। आयुकी जघन्य स्थितिउपशामना क्षुद्रभवग्रहणके संख्यातवें भाग मात्र होती है। इस प्रकार अद्धाच्छेद समाप्त हुआ।

सामित्तं। तं जहा -- सव्वकम्माणं जहा उक्कस्सद्धिदिउदीरणाए सामित्तं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं। जहा अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णद्धिदिउदीरणासामित्तं कदं तहा द्धिदिउवसामणासामित्तं

ओघजहणम्मि कायव्वं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणुयोगद्वाराणि जहा अभवसिद्धियपाओग्गद्धिदिउदीरणाए कदाणि तहा एत्थ कायव्वाणि । भुजगारो (अ प्रतो 'तहा कायव्वाणि एत्थ भुजगारो' इति पाठः।) पदणिक्खेवो वड्ढी च जहा द्विदिउदीरणाए कदा तहा द्विदिउवसामणाए वि कायव्वा । उत्तरपयडिद्धिदिउवसामणाए जहा उत्तरपयडिद्धिदिउदीरणाए परूवणा कदा तहा कायव्वा । एवं द्विदिउवसामणा समत्ता ।

स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इसप्रकार है --जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें सब कर्मोंका स्वामित्व किया गया है वैसे ही उसे यहाँ भी करना चाहिये । जिस प्रकारसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य स्थितिउदीरणाका स्वामित्व किया गया है उसी प्रकारसे ओघ जघन्यमें स्थितिउपशामनास्वामित्व को करना चाहिये । एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंको जैसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य स्थितिउदीरणामें किया गया है उसी प्रकार यहाँ भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा जैसे स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे स्थितिउपशामनामें भी करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामना की प्ररूपणा जैसे उत्तरप्रकृतिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहाँ भी करना चाहिये । इस प्रकार स्थितिउपशामना समाप्त हुई ।

अणुभागउवसामणा दुविहा मूलपयडिअणुभागुवसामणा उत्तरपयडिअणुभागुवसामणा चेदि । मूलपयडिअणुभागुवसामणा सुगमा । उत्तरपयडिअणुभागुवसामणाए पयदं -- तत्थ उक्कस्सेण जहा उक्कस्सओ अणुभांगसंतकम्मस्स पमाणानुगमो कदो तहा उक्कस्सओ अणुभागुवसामणापमाणानुगमो कायव्वो । जहा अक्खवय-अणुवसामयपाओग्गो जहण्णओ अणुभागसंतकम्मपमाणानुगमो कदो तहा जहण्णगो अणुभागुवसामणापमाणानुगमो कायव्वो । सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो च जहा अणुभागसंतकम्मस्स परूविदो तहा अणुभागुवसामणाए वि परूवेयव्वो । एत्तो अणुभागुवसामणाए तिव्वं -मंदप्पाबहुअं । तं जहा -- उक्कस्सेण चउसद्धिपदेहि जहा उक्कस्सए अणुभागबंधे अप्पाबहुअं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं । एवं जहण्णं पि कायव्वं । एवमणुभागउवसामणा समत्ता । पदेसउवसामणा जाणिदूण परूवेयव्वा ।

अनुभागउपशामना दो प्रकारकी है -- मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना और उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना। इनमें मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना सुगम है। उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना प्रकृत है -- उसमें उत्कर्षसे जैसे उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये। जिस प्रकार अक्षपक और अनुपशामक प्रायोग्य जघन्य अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है उसी प्रकारसे जघन्य अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये। स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्षकी प्ररूपणा जैसे अनुभागसत्कर्ममें की गयी है वैसे ही अनुभागउपशामनामें भी करना चाहिये। यहाँ अनुभागउपशामनामें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। यथा -- उत्कर्षसे चौसठ पदोंके द्वारा जिस प्रकार उत्कृष्ट अनुभागबन्धमें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही यहाँ भी उसे करना चाहिये। इसी प्रकारसे उसके जघन्य अल्पबहुत्वको भी करना चाहिये। इस प्रकार अनुभागउपशामना समाप्त हुई। प्रदेशउपशामनाकी प्ररूपणा करना चाहिये।

विपरिणामउवक्कम्मो चउव्विहो पगदिविपरिणामणा द्विदिविपरिणामणा अणुभागविपरि० पदेसविपरि० चेदि। पयडिविपरिणामना दुविहा (अ-का-ता प्रतिष्ठा न्युटितोऽयं अग्रिम 'दुविहा' पदपर्यन्तः पाठो म प्रतितोऽ योजितः।) मूलपयडिविपरिणामणा उत्तरपयडिविपरिणामणा त्ति। तत्थ मूलपयडिविपरिणामणा दुविहा देसविपरिणामणा सब्वविपरिणामणा चेदि। एत्थ अड्डपदं-- जासिं पयडीणं देसो णिज्जरिज्जदि अधद्विदिगलणाए सा देसपयडिविपरिणामणा णाम। जा पयडी सब्वणिज्जराए णिज्जरिज्जदि सा सब्वविपरिणामणा णाम। एदेण अड्डपदेण मूलपयडिविपरिणामणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सणियासो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं ण पेयव्वं। भुजगारो पदणिक्खेवो वड्डी च एत्थ णत्थि।

विपरिणामउपक्रम चार प्रकारका है -- प्रकृतिविपरिणामना, स्थितिविपरिणामना, अनुभागविपरिणामना और प्रदेशविपरिणामना। इनमें प्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है -- मूलप्रकृतिविपरिणामना और उत्तरप्रकृतिविपरिणामना। उनमें मूलप्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है -- देशविपरिणामना और सर्वविपरिणामना। यहाँ अर्थपद -- जिन प्रकृतियोंका अधःस्थितिगलनके द्वारा एकदेश निर्जराको प्राप्त होता है वह देशप्रकृतिविपरिणामना कही जाती

है। इस अर्थपदके अनुसार मूलप्रकृतिविपरिणामनाके स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्पबहुत्वको भी ले जाना चाहिये। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहाँ नहीं है।

उत्तरपयडिविपरिणामणाए अड्डपदं। तं जहा -- णिज्जिण्णा पयडी देसेण सव्वणिज्जराए वा, अण्णपयडीए देससंकमणेण वा सव्वसंकमणेण वा जा संकमिज्जदि एसा उत्तरपयडिविपरिणामणा णाम। एदेण अड्डपदेण सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च कायव्वं। भुजगारो पदणिक्खेवो वड्डी च णत्थि। पुणो पयडिड्डाणविपरिणामणा परूवेयव्वा। एवं पयडिविपरिणामणा समत्ता।

उत्तरप्रकृतिविपरिणामनामें अर्थपद। यथा -- देशनिर्जरा अथवा सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण अथवा जो प्रकृति देशसंक्रमण या सर्वसंक्रमणके द्वारा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त करायी जाती है यह उत्तरप्रकृतिविपरिणामना कहलाती है। इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्पबहुत्वको भी करना चाहिये। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहाँ नहीं है। तत्पश्चात् प्रकृतिस्थानविपरिणामनाकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार प्रकृतिविपरिणामना समाप्त हुई।

द्विदिविपरिणामणाए अड्डपदं -- द्विदी ओवट्टिज्जमाणा वा उव्वट्टिज्जमाणा ^{(अ-का प्रत्योः}
'उव्वट्टिज्जमाणा', ता प्रतौ '(उ) वड्ढिज्जमाणा' इति पाठः।) वा अण्णं पयडिं संकामिज्जमाणा वा विपरिणामिदा ^{(अ प्रतौ}
'विपरिणामदा' इति पाठः।) होदि। एदेण अड्डपदेण जहा टिदिसंकमो तहा अविसेसेण द्विदिविपरिणामणा
कायव्वा।

स्थितिविपरिणामनामें अर्थपद -- अपवर्तमान, उद्वर्तमान अथवा अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण करायी जानेवाली स्थिति विपरिणामिता (स्थितिविपरिणामना) कहलाती है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे स्थितिसंक्रम किया गया है वैसे ही निर्विशेष स्वरूपसे स्थितिविपरिणामनाको भी करना चाहिये।

अणुभागविपरिणामाए अद्वपदं -- ओकड्डिदो व उक्कड्डिदो वि अण्णपयडिं णीदो वि अणुभागी विपरिणामिदो होदि। एदेण अद्वपदेण जहा अणुभागसंकमो तहा णिरवयवं अणुभागविपरिणामणा कायव्वा।

अनुभागविपरिणामनामें अर्थपद -- अपकर्षणप्राप्त, उत्कर्षणप्राप्त अथवा अन्य प्रकृति को प्राप्त कराया गया भी अनुभाग विपरिणामित होता है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे अनुभागसंक्रम किया गया है वैसे ही पूर्णतया अनुभागविपरिणामनाको करना चाहिये।

पदेसविपरिणामणाए अद्वपदं -- जं पदेसगं णिज्जिण्णं अण्णपयडिं वा संकामिदं सा पदेसविपरिणामणा णाम। एदेण अद्वपदेण जारिसो पदेससंकमो तारिसी पदेसपरिणामणा। णवरि जं णिज्जरिज्जमाणं उदएण तमदिरेगं पदेससंकमादो विपरिणामणाए। एवमुवक्कम्मो ति समत्तमणुओगद्वारं।

प्रदेशविपरिणामनामें अर्थपद -- जो प्रदेशाग्र निर्जराको प्राप्त हुआ है अथवा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त हुआ है वह प्रदेशविपरिणामना कही जाती है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे प्रदेशसंक्रम किया गया है वैसे ही प्रदेशविपरिणामनाको करना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रदेशाग्र उदयके द्वारा निर्जीर्यमाण है वह प्रदेशसंक्रमसे विपरिणामनामें अधिक है। इस प्रकार उपक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।
